देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयताम्।। ऋ० १/८९/२

ISSN : 2395-7115

Impact Factor
3.811

किन्नर महा–विशेषांक

March 2021. Vol. 13, Issue-3

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

किन्नर विमर्श : इतिहास, समाज, साहित्य के संदर्भ में

संरक्षक : प्रो० एम० एम० सक्सेना, कुलपति
प्रधान सम्पादक : डॉ० विनोद कुमार शर्मा, रजिस्ट्रार
सम्पादक : डॉ० नरेश सिहाग, एडवोकेट
सहसम्पादक : डॉ० मोहिनी दहिया, डॉ. पूजा धमीजा, डॉ० भीमसिंह

हिन्दी विभाग, टांटिया विश्वविद्यालय श्रीगंगानगर, राजस्थान

प्रकाशक : गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)

स्व. चौ. गुगनराम सिहाग व उनकी छोटी बहन स्व. श्रीमती गीना देवी के शुभाशीर्वाद से प्रकाशित

JOURNAL OF HUMANITIES, COMMERECE, SCIENCE, MANAGEMENT & LAW

बोहल शोध मञ्जूषा

Bohal Shodh Manjusha

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

Vol. 13, ISSUE-3 (KINNER MAHA VISHESHANK 2021) ISSN : 2395-7115

प्रेरणा :
चौ. एम. सिहाग

प्रधान सम्पादक :
डॉ. विनोद कुमार शर्मा
रजिस्ट्रार,
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

सम्पादक :
डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट
विभागाध्यक्ष एवं शोध निर्देशक (हिन्दी विभाग)
टांटिया विश्वविद्यालय, श्रीगंगानगर (राज.)

सह सम्पादिका :
डॉ. पूजा धमीजा

सह सम्पादिका :
डॉ. मोहिनी दहिया

सह सम्पादक :
डॉ. भीमसिंह

प्रकाशक :
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.)
202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड, भिवानी–127021 (हरियाणा)

152. किन्नर समाज की वर्तमान स्थिति	डॉ. कंचन पुरी	619–921
153. Transgender Rights as Human Rights	NAVIN KUMAR	622-625
154. सामाजिक संदर्भ में किन्नर समाज की समस्याएं व समाज के उनके प्रति कर्तव्य	कुमारी रूचि शर्मा	626–629
155. किन्नर समाज की अर्थ और परिभाषा	निशा सिंह पटेल	630–632
156. किन्नर समाज और मानवाधिकार	संतोष कुमारी	633–636
157. मानवाधिकार और किन्नर	प्रियंका वर्मा, प्रो. मंजूसिंह	637–642
158. भारत में किन्नरों का सामाजिक एवं सांस्कृतिक बहिष्करण	पूजा प्रमोद पी	643–645
159. तृतीय लिंग (उद्भव, इतिहास, समाज)	मीना	646–650
160. थर्डजेंडर कानून के दायरे में (वैधानिक प्रावधान)	वंदना शर्मा	651-654
161. THIRD GENDER A BACKWARD COMMUNITY	GEETA DEVI	655-657
162. भारत के किन्नर समाज में आर्थिक संकट : एक विश्लेषण	राजेश कुमार पुर्वे	658–659
163. संस्कृत साहित्य में किन्नर विमर्श	रामकुमारी	660–663
164. किन्नर समाज में परिवर्तन	Nisha Sahani	664-666
165. विमर्श संकल्पना एवं स्वरूप : किन्नरों के संदर्भ में	डॉ. बी. नन्दा जागृत	667–671
166. समाज का पिछड़ा वर्ग किन्नर समुदाय	डॉ० लवलीन कौर	672–675
167. किन्नर साहित्य और समाज	तुल्या कुमारी	676–678
168. उपन्यास साहित्य में चित्रित किन्नर समाज	डॉ. संजय बजरंग देसाई	679–681
169. किन्नर समाज और बेरोजगारी	ओमप्रकाश	682–685
170. किन्नर समाज में परिवर्तन	डॉ. भरत लाल	686–689
171. किन्नर – सामाजिक संदर्भ में	JAYPAL NAYAK	690-692
172. आधुनिक हिन्दी उपन्यासों में तृतीय लिंगी समाज की व्यथा	नीलम देवी	693–695
173. किन्नर समुदाय की सामाजिक समस्याएं	प्रो. नयन शादुले-राजमाने	696–699
174. समकालीन हिन्दी उपन्यासों में किन्नर विमर्श	जीता पी. एट्टूत्तिल	700–703
175. राजस्थानी साहित्य में पहली बार किन्नर पीड़ा का यथार्थ दर्शन	सुमन, डॉ0 श्रवण कुमार	704–708
176. वैश्विक साहित्य और किन्नर समाज	डॉ. एम.एल. पाटल	709–711
177. तीसरे लिंग की संघर्ष गाथा : 'संकल्प'	डॉ. देव्यानी महिड़ा	712–715

www.bohalsm.blogspot.com
Impact Factor : 3.811

Bohal Shodh Manjusha ISSN : 2395-7115
Kinner Maha Visheshank 2021 Page No. : 696-699

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED & REFEREED
MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

किन्नर समुदाय की सामाजिक समस्याएं

-प्रो. नयन शादुले-राजमाने

गोविंदलाल कन्हैयालाल जोशी रात्रीचे, वाणिज्य महाविद्यालय, लातूर।

प्रस्तावना :-

मानव विकास की यात्रा में अनेक पड़ाव आते है। इसमें प्राकृतिक, मानसिक, दैहिक, सामाजिक परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है। तथा इसमें आ, परिवर्तनों कों मानव ने स्वीकार किया है। आज तक जिन हाशिये के लोगों को कहीं स्थान नहीं था उन्हें आज मुख्यधारा में स्थान मिलना आरंभ हुआ है। यह परिवर्तन सामाजिक विकास के नये पड़ाव का सूचक ही है। स्त्री, दलित तथा आदिवासियों जैसे उपेक्षित माने जाने वाले वर्गों को भी आज पहचान मिली है।

इसमें एक वर्ग 20वीं शती तक पिछडा रहा वो है किन्नर वर्ग। किन्नर समाज का यह वर्ग है, जिसमें पुरुष की देह में स्त्रीयोचित गुण होते हैं या स्त्री की देह में पुरुष देह की विशेषता होती है। इसी जैविक अनिश्चितता के कारण होता है। वास्तव में यह एक जैविक के कारण यह वर्ग समाज के अन्य वर्गों की भांति सामान्य प्रतीत नहीं होता। इस संबंध में समाज में अनेक प्रकार के भ्रम है। सामान्य समाज में वह जिंदा भी नहीं रह पाता है। क्योंकि अपनी संतान की अपेक्षा समाज को लेकर अधिक चिंतित होने के कारण घर के सदस्य संतान की हत्या करवा देना चाहते है। या फिर कुछ मामलों में थोड़ी–बहुत आत्मीयता जीवित रह गई तो ऐसी स्थिती में किन्नर के रुप में जन्में बच्चे के प्राण तो बच जाते हैं, किंतु उसे परिवार के साथ रह पाने का सुख प्राप्त नहीं होता, क्योंकि उसे जन्म के बाद किन्नर समुदाय के पास या तो स्वयं छोड़ दिया जाता हैं या किन्नर समाज जबरन उसे अपने समुदाय में शामिल करने के लिए ले जाते हैं।

किन्नर को जीवन के प्रारंभ से लेकर जीवन के अंत तक अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उसकी सबसे बड़ी समस्या उसकी देह होती है। दैहिक बनावट और अंतकरण की भावनाओं में सामंजस्य न होने के कारण वे मानसिक वेदना तो सह लेते हैं, साथ ही कई बार उनकी देह शोषण का शिकार भी हो जाती है।

लोगों के घरों में मंगल अवसरों पर अपनी वेदना को छिपाकर हर्षित होने वाले किन्नरों की देह लोगों में प्रायः आकर्षण का केंद्र बनी रहती है। इसीलिए कुछ कुंठित मानसिकता के लोग उनका दैहिक शोषण करते हैं।

शाररिक विकृतियों की विड़म्बनाओं के अतिरिक्त एक अन्य समस्या भी किन्नर समुदाय के सामने खड़ी रहती है, वह हैं आर्थिक विपन्नता। किन्नर समुदाय लोगों के मंगलपर्वो और उत्सवों पर नाच–गाकर, तालियां पीटकर अपना जीवन जैसे–तैसे निभाता है। उनके लिए सरकारी नौकरी प्राप्त करने का कोई प्रावधान नहीं है। इतना ही नहीं तो आम तौर पर बाकी कामों के लिए भी उन्हें रखा नहीं जाता है। इसलिए प्रायः वह असाह अवस्था में और मजबुरीवश सड़कों पर, रेलगाड़ियों में तालियां पीटकर मांगते दिखाई देते हैं। आर्थिक विकास के अवसरों के अभाव में वे इस प्रकार का जीवन जीने के लिए विवश हैं। सरकार द्वारा या समाजद्वारा उन्हें कोई अवसर प्राप्त नहीं होता हैं।

किन्नरों की आर्थिक विपन्नता का एक अन्य कारण अशिक्षा भी है। उन्हें शिक्षा के अवसर प्राप्त नहीं होते क्योंकि समाज और प्रशासन दोनों ही इस समस्या से अनभिज्ञ हैं। किन्नर भले ही विषम लिंगी है, किंतु वे हैं तो मनुष्य ही।

मान–सम्मान, पीड़ा–अपमान, शक्ति और दलन इन सबसे प्रभावित। समाज द्वारा की जाने वाली उपेक्षा का दंश उन्हें और भी अलग–थलग बनाए रखता है।

भारत में किन्नरों के कई घराने हैं। ये घराने नये नहीं हैं, बल्कि ये सदियों से चले आ रहे हैं। जैसे कुछ किन्नर पुरातन समय में राजदरबार में या रानियों के कक्ष में थे तो कुछ किन्नर सेना में या छावनियों में अपनी सेवा देते थे और कुछ अपनी सेवा मंदिरों में प्रदान करते थे। उनके कार्यक्षेत्र के अनुरुप उनके घराने में नाम पड़ गये है। अतः कोई किन्नर किसी भी घराने में चेला बनता है या गद्दी पर आसीन होता है तो वह उसी घराने की परंपरा या रीति–रिवाजों को आगे बढ़ता है। किन्नर समुदाय में गुरु की बहुत अधिक मान्यता होती है। प्रत्येक डेरे या घराने के किन्नर अपने गुरु की हर आज्ञा का पालन करते हैं तथा उसका सम्मान करते हैं। अन्य लोगों के बीच भी उनका विशेष सम्मान रहता है। यह माना जाता है कि किन्नर गुरु का आशीर्वाद सबसे अधिक फलदायी होता है।

किन्नरों के मृत्यु होने पर वे अपने रिवाज के मुताबिक बाकी किन्नर चुपचाप उसे दफनाने ले जाते है। वे किसी को भी पता नहीं लगने देते। तथा उनकी यह बात गोपन मानी जाती है कि कफन को गड्ढे में रखने के बाद लाश को उल्टा रखकर उपस्थित सभी किन्नर अपनी–अपनी कमर में बंधे जूते–चप्पल निकाल कर लाश को पीटना शुरु कर देते है। तथा अगले जनम में किन्नर न बनने की कामना करते है। वस्तुतः यह उनके जीवन का बहुत ही संवेदनशील और मार्मिक पक्ष है। वे समाज को दुआएं देते हैं, लेकिन समाज से मिलने वाला बहिष्कार उन्हें किस तरह मर्मान्तक पीड़ा पहुंचता है, अंतिम संस्कार के इस पक्ष से हृदयविदारक रुप में सामने आता है।

सार्वजनिक जगहों पर अपनी जरुरतों को पूरा न करने के स्थिति को लेकर अपने परेशानी के बारे में बात करते हुए एक किन्नर ने अपनी आपबीती सुनाई जो 'अमर उजाला' में छपी थी। कि जैसे ही वे किसी पब्लिक टॉयलेट में प्रवेश करते हैं तो लोग उनकी तरफ शक भरी निगाह से देखने लगते हैं। ऐसी स्थिति में वे न तो पुरुषों के टॉयलेट में प्रवेश कर पाते हैं न ही महिला शौचालयों का इस्तेमाल कर पाते हैं। इतनाही नहीं तो अस्पताल, स्कूल ओर पार्क के टॉयलेट इस्तेमाल करने से भी उन्हें रोक दिया जाता है। मैसूर एकमात्र ऐसा शहर है जहां किन्नरों के लिए रेस्ट रुम और पब्लिक टॉयलेट को तैयार किया गया है।

किन्नर समाज को हाल ही में तृतीय लिंग 'थर्ड जेंडर' के रुप में मान्यता दी गई है। यह तृतीय लिंग जिसे हम हिजड़ा, किन्नर, उभयलिंगी, खव्वाजासरा, पावैया, मेहला व कोती आदि नामों से भी जानते हैं। किन्नर का अस्तित्व अनंत काल से चला आ रहा है। महाभारत काल के शिखंडी और बृहन्नला इसके प्रमाण हैं। किन्नर समाज एक सर्वाधिक तिरस्कृत और उपहासपूर्व समाज रहा है। आज वर्तमान समय में समाज और सरकार द्वारा कुछ प्रयास किए जा रहे है कि उन्हें भी अन्य वर्ग के बराबर के अधिकार, मान–सम्मान प्रदान किए जाएं।

पिछले साल 16 अप्रैल को सुप्रीम कोर्ट में न्यायमुर्ति के. एस. राधाकृष्णन और न्यायमुर्ति ए.के. सीकरी की खंडपीठ ने केंद्र और राज्य सरकारों को ट्रांसजेंडरों के साथ सामाजिक और शैक्षणिक रुप से पिछड़े वर्ग के नागरिकों के तौर पर व्यवहार करने और उन्हें शैक्षणिक संस्थाओं में प्रवेश और सरकारी सेवाओं में 'ओबीसी की तरह' आरक्षण उपलब्ध कराने को कहा है।

आज यह समुदाय विभिन्न कलात्मक प्रतिभाओं के साथ ही साथ शैक्षणिक गुणों से भी संपन्न है, इसके बावजूद ये अपनी पहचान और समाज की मुख्यधारा में शामिल होने के लिए तरस रहा है।

किन्नरों के अंदर जो विविध प्रकार की प्रतिभाएं भरी पड़ी है, उनका इस्तेमाल समाज और राष्ट्रहित में किया जाना चाहिए। इसमें उन्हें भी समाज की मुख्यधारा में जुड़ने में आसानी होगी। उन्हें उनकी पहचान, उनकी प्रतिभा और योग्यता

के बल पर आंका जाना चाहिए। न कि उनके शरीर की कमियों के आधार पर।

किन्नर समुदाय के लोगों के पास बहुत सारी क्षमताएं है। माहौल अच्छा मिले तो वे जीवन में बहुत आगे बढ़ सकते हैं। परंतु सामाजिक विषमताओं के चलते ये सारी संभावनाएं और प्रतिभाएं अंदर दबी रह जाती हैं। मुख्य परेशानी है समाज की मानसिक अक्षमता। जैसे ही लोगों को पता चल जाता है तो भेदभाव और बहि'कार की प्रकिया शुरु हो जाती है। इसका एक कारण आज्ञनता भी है। तीसरे लिंग के बारे में उनकी जानकारी न के ही बराबर है।

अपने परंपरागत आचरण के कारण यह भीड़ में सबसे अलग–थलग नज़र आते है। इनका पहनावा, बातचीत का लहजा, ताली बजाना, सदियों के अत्याचार और भेदभाव के चलते, अपनी एक अलग पहचान बनाने की प्रवृत्ति के कारण है। इस समाज को चाहिए कि अन्य समाज से अलग दिखने व रहने की कोशिश न करे। किन्नरों को अपनी वर्तमान पारंपारिक छवि को बदल कर समाज की मुख्यधारा से जुड़ने की कोशिश करनी होगी। इससे आम जनता उनकी उपस्थिति में स्वयं को असहज न महसूस करें। पर यह सब तभी संभव हैं जब समुदाय के लोगों की सोच बदलेगी।

किन्नर समाज में अभावों के कारण आक्रोश तथा क्रोध की भावना बढ़ रही है। रोजगार के अधिकतर द्वार उनके लिए बंद है। अतः उनके पास पेट भरने के लिए केवल भीख मॉगने, घर–घर जाकर बधाई गाने और वेश्यावृत्ती करने के अलावा कोई और विकल्प बचता ही नहीं है।

इसलिए समुदाय के सदस्यों, किन्नरों की युवा पीढ़ी को इन नकारात्मक परिस्थितियों से निकल कर एक स्वस्थ वातावरण में रखना जरुरी है। उन्हें शिक्षा सुविधा प्राप्त कराना, नौकरी या व्यवसाय उपलब्ध कराना। आवास की सुविधा उपलब्ध कराने, राशनकार्ड और पहचान पत्र मुहैया कराने, वृद्धावस्था पेंशन दिए जाने, कला, संस्कति विभाग से तमाम जिला एवं प्रचंड स्तर के कार्यालयों में किन्नर कलाकारों की नियुक्ति आदि प्रयास किए जाने चाहिए। वे भी समाज का एक अंग है। समाज को किन्नरों को स्वीकार करना ही होगा। उन्हें किन्नर नहीं, इंसान समाझा जाना चाहिए।

किन्नरों के विकल स्थिति के बावजूद ऐसे कई किन्नर हैं जो समाज की इस विकृत सोच से जूझते हुए स्वयं को लीक से हटकर खड़ा करने में सफलता प्राप्त की है। जिसमें :–

1. कलकी सुब्रमण्यम हैं। जिन्होंने स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के बाद स्वयं को सामाजिक कार्यकर्ता तथा पत्रकार के रुप में प्रतिष्ठित किया है।
2. पद्मिनी प्रकाश। जो कि एक कथक नर्तकी और गायक कलाकार है।
3. मधुबाई जो छत्तीसगढ़ के रायगढ़ की मेयर रह चुकी है।
4. भारती नाम की किन्नर ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया और थियोलॉजी में स्नातक की उपाधि प्राप्त करके इन्जील्वादी चर्च में पादरी बन गईं।
5. मानवी बांद्योपाध्याय विवेकानंद सतोबार षिकी महाविद्यालय में बंगाली भाषा की सहायक प्रोफेसर हैं। इन्होंने किन्नरों के जीवन पर आधारित 'एंडलेस बॉडेज' नामक उपन्यास भी लिखा है।
6. कानपूर की काजल किरण पार्षद रह चुकी हैं और समाजसेविका के रुप में प्रतिष्ठित हैं।
7. तमिलनाडु की पृथिका यशिनी को लंबी अदलती लड़ाई के बाद सब इन्स्पेक्टर के पद पर तैनाती प्राप्त हुई।
8. कोलकाता की जोईता मंडल लंबे सामाजिक संघर्ष के बाद इस्लापुर की लोक अदालत में न्यायधीश के पद पर कार्यरत है।
9. राजस्थान की गंगा कुमारी ने भी लंबी अदालती लड़ाई के बाद कॉन्स्टेबल पद पर नियुक्ति प्राप्त की।
10. लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी एक टीवी कलाकार, भरत नाट्यम नर्तिका और सामाजिक कार्यकर्ता है। वह किन्नरों के

हित के लिए कार्य करती है। 'मी हिज़डा, मी लक्ष्मी' उनकी यह किताब काफी चर्चित हैं।

11. गौरी सांवत मुंबई, की एक ट्रांसजेंडर कार्यकर्ता हैं। वह साक्षी, चार चौघी की निदेशक हैं जो ट्रांसजेंडर लोगों और एचआईवी या एडस वाले लोगों की मदद करती है। उन्हें महाराष्ट्र में चुनाव आयोग का सदभावना दूत बनाया गया था।

ये कुछ उदाहरण हैं कि किन्नर मात्र एक शारिरिक विकृति है न की मानसिक। इन्हें भी यदि अवसर दिया जाए जो ये भी समाज और देश के लिए वह सब कुछ कर सकते हैं जो एक सामान्य व्यक्ति कर सकता है। किन्नरों को भी वह सब अधिकार प्राप्त है जो एक सामान्य व्यक्ति के लिए निर्धारित है। अतः किन्नर समुदाय की सामाजिक समस्याओं को सुलझाने में समाज और सरकार की ओर से प्रयास होना जरुरी है।

संदर्भ :-

1. लैंगिक भिन्नता के शिकार किन्नर आखिर कैसे जुड़ेंगे समाज की मुख्य धारा से?, प्रभासाक्षी न्यूज नेटवर्क, अक्तूबर 21, 2019।
2. किन्नर समाज और सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष, शैलेंद्र सिंह कुशवाह, युगधारा, साहित्य एवं सामाजिक सरोकारों तथा अंतराष्ट्रीय बहुविषयक शोध की ई–पत्रिका।
3. अमर उजाला, नई दिल्ली, 22 अप्रैल 2017।
4. थर्ड जेंडर विमर्श, संपादक शरद सिंह, सामायिक प्रकाशन, नई दिल्ली।

8805426071

bhadulenayan13@gmail.com

PRINTED MATTER/PRINTING BOOK CLAUSE 121 (A) P & T GUIDE

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक गुगनराम सोसायटी रजि. के लिए डॉ. नरेश सिहाग एडवोकेट ने मनभावन प्रिन्टर्ज, भिवानी से छपवाकर गीना प्रकाशन, 202, पुराना हाऊसिंग बोर्ड भिवानी-127021 (हरि.) से वितरित की।

ISSN 2395:7115